10/10

online

3

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): विकास सुथा

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): (3), 9 अक्टूबर, 2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	1	3	3	3	4

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Vikas

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 138½

टिप्पणी (Remarks): बहुत अच्छा। कुछ उत्तरों को थोड़ा और बेहतर बनाने का प्रयत्न करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

A3

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

10 × 5 = 50

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए:

(क) खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

उत्तर) 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में खड़ी बोली के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज, समाज-सुधारकों एवं प्रेस के योगदान के साथ-साथ ईसाई मिशनरियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

गौरतलब है कि ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के दौरान भारतीय शासन के संबंध में ब्रिटिश संसद द्वारा पारित 1813 के अधिनियम द्वारा ईसाई मिशनरियों को भारत में धर्म के प्रचार-प्रसार का वैधानिक अधिकार प्रदान किया गया।

प्रारम्भ में ईसाई मिशनरियों को यह भ्रम हुआ कि भारत में फ़ारसी प्रधान हिन्दी व्यापक तौर पर प्रचलित है; परंतु जल्द ही उन्हें स्पष्ट हुआ कि खड़ी बोली के द्वारा ही वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कर सकते हैं। पोप चेम्बरलीन के आगमन के पश्चात् तो खड़ी बोली में ईसाई धर्म के प्रचार - प्रसार की गति और तीव्र हुई।

ईसाई मिशनरियों द्वारा धार्मिक साहित्य का सरल सहज खड़ी बोली में अनुवाद द्वारा खड़ी बोली के गद्य भाषा के रूप में विकास में योगदान दिया गया। 'हेनरी टॉमस कोलब्रुक' द्वारा पहली बार बाइबिल का खड़ी बोली में अनुवाद किया गया। इसके बाद तो अनुवादों की शृंखला ही प्रारंभ हो गई। व्यापक प्रचार - प्रसार हेतु मुद्रण के लिए टाइप ढालने की भी कोशिश की गई।

ईसाई मिशनरियों के प्रयासों की प्रतिक्रिया स्वरूप ही दयानंद सरस्वती, राजा राममोहनराय, श्रद्धाराम फिल्लौरी आदि सुधारकों द्वारा धर्म, संस्कृति की रक्षा हेतु अपने विचारों के प्रसार हेतु भी खड़ी बोली को ही अपनाया जाना खड़ी बोली के विकास में सहायक रहा।

Ave
6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सुझाव

उत्तर) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 20 वीं सदी के प्रारम्भ से ही व्यक्तिगत एवं संस्थागत प्रयास प्रारम्भ हुए। व्यक्तिगत प्रयासों में तिलक (तिलक फांट), सावरकर (अ की बारहखड़ी), श्रीनिवास ('ऽ' द्वारा महाप्राण), गोरखनाल (मात्रा को अलग करना), डा. श्याम सुंदर दास (अनुस्वार का अधिक प्रयोग) के प्रयास प्रमुख हैं।

संस्थागत प्रयासों में सबसे पहला एवं महत्वपूर्ण प्रयास 1935 ई. में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के दौरान किया गया जिसमें मानकीकरण संबंधी 'नागरी लिपि सुधार समिति' का गठन किया गया जिसके ~~सभापति~~ संयोजक काका कालेलकर थे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की 'नागरी लिपि सुधार समिति' द्वारा की गई अनुशंसाएँ निम्नलिखित हैं:-

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(1) 'अ' की बारहखड़ी का प्रयोग स्वीकार किया जाए जिसमें सभी स्वरों को 'अ' के रूप में दर्शाया जाए। जैसे- अ, आ, अि, अी, अु, अू.. आदि।

(2) अनुस्वार के प्रचलन द्वारा कठिनता कम की जाए। जैसे- गङ्गा > गंगा।

(3) शिरोरेखा लेखन में न रहे परंतु, मुद्रण में बनी रहे।

(4) मात्राओं के संबंध में डॉ. गोरखनाथ के सुझावों को स्वीकार किया जाए।
जैसे- पानी ~~पानी~~ > प ा न ी।

गांधीजी द्वारा ~~अपने~~ अपने 'हरिजन' पत्र में इन्हीं सुझावों को प्राय: स्वीकार किया गया है।

5½/10

Scanned by CamScanner

A3

The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) खड़ी बोली आंदोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

उत्तर)

19 वीं शताब्दी में जिस तीव्र गति से खड़ी बोली का विकास हुआ, वैसा विकास अन्य भाषाओं का प्रायः नहीं दिखाई देता। इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध में खड़ी बोली के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज के प्रिंसिपल जॉन गिलक्रिस्ट एवं उनके सहयोगियों लल्लू लाल, सदल मिश्र, सदासुखलाल, इंशाअल्ला खाँ का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसके अलावा ईसाई मिशनरियों एवं समाज सुधारकों की भी प्रमुख भूमिका रही।

19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारतेन्दु एवं उनकी मंडली का खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा। परंतु, भारतेन्दु एवं उनकी मंडली की चिंता खड़ी बोली को गद्य की भाषा के रूप में स्थापित करने की थी न कि उसे एकमात्र साहित्यिक भाषा (गद्य व पद्य दोनों) बनाने एवं मानक स्वरूप प्रदान करने की।

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

२० वीं सदी में खड़ी बोली को एकमात्र साहित्यिक भाषा बनाने, भाषायी द्वैत समाप्त करने एवं मानकता प्रदान करने में आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान अविस्मरणीय है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में द्विवेदी युग (1900-1918) के दौरान खड़ी बोली के पक्ष में आंदोलन चलाया गया जिसमें अयोध्या प्रसाद खत्री, डॉ. श्यामसुंदर दास, पंडित गौरीदत्त, श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसी आंदोलन के फलस्वरूप कामता प्रसाद गुरु एवं किशोरीदास वाजपेयी द्वारा खड़ी बोली हिन्दी के व्याकरण तैयार किए गए।

इस प्रकार खड़ी बोली के पक्ष में चलाए गए आंदोलन में अयोध्याप्रसाद खत्री का योगदान विशिष्ट एवं अविस्मरणीय है।

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि: अंतर्संबंध

उत्तर) लिपि एवं भाषा का संबंध बहुत गहरा है। भाषा के विकास के पश्चात भाषा को अपने संरक्षण एवं विकास हेतु लिपि की आवश्यकता होती है। लिपि के विकास का क्रम प्राय: चित्रात्मक लिपि, सूत्र लिपि, प्रतीकात्मक लिपि, अक्षरात्मक लिपि, वर्णात्मक लिपि के रूप में होता है। हिन्दी की देवनागरी लिपि एक अक्षरात्मक लिपि है। ~~क्योंकि~~ ~~इसमें~~

देवनागरी लिपि का मूल संबंध ब्राह्मी लिपि से है। गौरतलब है कि अधिकांश भारतीय भाषाओं की लिपियों की ऐतिहासिक पूर्वज ब्राह्मी लिपि ही है।

प्राचीन काल में ब्राह्मी लिपि के दो रूप प्रचलित रहे — उत्तरी ब्राह्मी एवं दक्षिणी ब्राह्मी। दक्षिणी ब्राह्मी लिपि से ही दक्षिण भारतीय भाषाओं कन्नड़, तेलुगु

Scanned by CamScanner

तमिल, मलयालम की लिपियाँ अर्थात् द्रविड़ भाषाओं की लिपियों का विकास हुआ।

उत्तरी ब्राह्मी लिपि को गुप्त काल में 'गुप्त लिपि' कहा गया। जैसे-जैसे यह लिपि लोकप्रचलन के कारण टेढ़े मेढ़े अक्षरों से युक्त हुई, इसे 'कुटिल लिपि' कहा जाने लगा।

कुटिल लिपि को विभिन्न क्षेत्रों में विकास प्रक्रिया के दौरान विभिन्न नामों से जाना गया। कश्मीर में कुटिल लिपि से विकसित लिपि को 'शारदा लिपि' कहा गया। वहीं, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि मध्य भारत में विकसित लिपि को 'प्राचीन नागरी' लिपि कहा गया। इसी प्राचीन नागरी लिपि से आधुनिक आर्यभाषाओं की विभिन्न लिपियों का विकास हुआ है जिसमें हिन्दी के लिए प्रयुक्त लिपि को 'देवनागरी लिपि' कहा गया। 19 वीं एवं 20 वीं सदी में मानकीकरण प्रयासों के कारण इसी देवनागरी को अखिल भारतीय लिपि बनाने के प्रयास हुए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned by CamScanner

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आर्य समाज का योगदान

उत्तर) जिस समय ईसाई मिशनरियों द्वारा खड़ी बोली को अपने धार्मिक विचारों के संप्रेषण का माध्यम बनाया जा रहा था, उसी समय दयानन्द सरस्वती एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के प्रयास किए गए।

आर्य समाज की स्थापना का लक्ष्य 'वेदों की ओर लौटो' की घोषणा के साथ कुरीतियों को समाप्त करके राष्ट्रीय, सांस्कृतिक जागरण एवं एकीकरण का था। दयानन्द सरस्वती इस बात को भली-भाँति समझते थे कि देश की एकता के लिए 'भाषायी एकता' पूर्वशर्त है। अतः उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाकर एकीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास किया।

दयानन्द सरस्वती द्वारा हिन्दी में

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना करके हिन्दी का प्रचार प्रसार किया गया। उनकी तर्क-वितर्क लेखन शैली के चलते यह स्पष्ट हुआ कि खड़ी बोली हिन्दी में आधुनिक विचारों के अनुकूल तार्किक लेखन किया जा सकता है। इतना ही नहीं, दयानंद सरस्वती द्वारा आर्य समाज के मूल सिद्धांतों में हिन्दी के प्रचार प्रसार को भी शामिल किया गया।

दयानंद सरस्वती के बाद भी आर्य समाज लगातार राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्थापना का प्रयास करता रहा जिसमें लाला लाजपतराय की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अच्छा 6/10

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वाधीनता-आंदोलन के दौर में तमिलनाडु और केरल में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिये। 20

उत्तर)

वर्तमान समय में जिस हिन्दी का दक्षिण भारतीय राज्यों जैसे - तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक में राजनीतिक कारणों से विरोध किया जाता है, वही हिन्दी स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व इन राज्यों में सर्वसम्मत रूप से राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार की जा चुकी थी।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में सर्वप्रमुख योगदान भारतीय स्वाधीनता संग्राम का रहा है। स्वाधीनता संग्राम की सफलता के लिए भारतीय जनमानस की एकता की आवश्यकता थी और इस एकता के लक्ष्य के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी के रूप में भाषायी एकता को स्वीकार किया गया। बंगाल में केशवचंद्र सेन, बंकिम चंद्र चटर्जी, महाराष्ट्र में तिलक, सावरकर, दक्षिण भारतीय

Scanned by CamScanner

राज्यों में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, टी. विजय-राघवाचार्य, काका कालेलकर आदि स्वाधीनता सेनानियों द्वारा सर्वसम्मति से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया।

जहाँ तक तमिलनाडु एवं केरल में स्वाधीनता संग्राम के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का प्रश्न है, तो इसमें कई ~~व्यक्तियों~~ व्यक्तियों एवं समितियों का योगदान है। तमिलनाडु एवं केरल में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में सी. राजगोपालाचारी एवं ~~श्री~~ टी. विजयराघवाचार्य का योगदान महत्वपूर्ण है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार करते हुए दक्षिण भारतीय लोगों में इसका प्रचार-प्रसार किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों से हिन्दी सीखने का आह्वान किया एवं कहा कि "हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही स्वतंत्र भारत की राजभाषा भी होगी।"

Scanned by CamScanner

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के अलावा टी. विजयराघवाचार्य का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि "चाहे व्यावहारिक दृष्टि से, सैद्धान्तिक दृष्टि से या व्याकरणिक दृष्टि से देखा जाए, हिन्दी ही देश की राष्ट्रभाषा है।" एक अन्य स्थान पर उन्होंने कहा कि दक्षिण किसी भी दक्षिण भारतीय विद्यार्थी को तब तक शिक्षित न समझा जाए जब तक उसने हिन्दी की कोई लिखित या मौखिक परीक्षा उत्तीर्ण न की हो।

इन दोनों महान व्यक्तित्वों के अलावा तमिलनाडु एवं केरल में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में 'राष्ट्रभाषा प्रचार समितियों' की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। महात्मा गांधी की प्रेरणा से दक्षिण भारत में कई राष्ट्रभाषा प्रचार समितियों की स्थापना हुई जिनकी शाखाएँ

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दक्षिण भारत के विभिन्न भागों में खोली गई। मद्रास में 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की स्थापना स्वयं गांधीजी द्वारा की गई। मोटूरि सत्यनारायण एवं काका कालेलकर लंबे समय तक इन समितियों के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार करते रहे।

इनके अलावा, राष्ट्रप्रेम की भावना से ओत-प्रोत दक्षिण भारतीय विद्यार्थियों का भी राष्ट्रभाषा के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान है जिन्होंने स्वयं गांधीजी से मिलकर दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार का आग्रह किया।

परंतु, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के लिए क्षेत्रीय भावनाओं को उभारकर राष्ट्रभाषा का दर्जा हिन्दी को प्रदान करने का विरोध किया गया जो उपरोक्त प्रयासों पर स्वातंत्र्योत्तर परिदृश्य में भारी साबित हुआ।

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी भाषा के मानकीकरण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

उत्तर) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जिस समय हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उतरे तब तक खड़ी बोली गद्य की भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी थी। भारतेन्दु युग के दौरान खड़ी बोली को गद्यभाषा के रूप में स्थापित तो कर लिया गया, परंतु इसके मानकीकरण का प्रयास नहीं दिखाई देता। इसके कारण व्याकरणगत अनियमितता, 'चीजें, चीजें', उसने, किन्ने आदि कई अमानक प्रयोग हिन्दी में चल रहे थे।

महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं उनके नेतृत्व में अन्य व्यक्तियों जैसे- पंडित गौरीदत्त, अंबिका प्रसाद खत्री, डॉ. श्यामसुंदर दास, श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' आदि द्वारा हिन्दी के मानकीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किया गया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से ही कामता प्रसाद गुरु एवं किशोरीदास वाजपेयी द्वारा हिन्दी

Scanned by CamScanner

The Vision

(कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। Please do not write anything except the question number in this space)

व्याकरणीकरण द्वारा मानकीकरण का प्रयास किया गया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं उनके युग के अन्य विद्वानों की हिन्दी के मानकीकरण संबंधी मान्यताएँ निम्नलिखित हैं:-

(1) परसर्ग को संज्ञा से अलग हटाकर लिखा जाना चाहिए। जैसे- राम ने।

(2) सर्वनाम के साथ परसर्ग को सटाकर लिखना चाहिए। जैसे- उसने।

(3) सर्वनाम के साथ बहुपदीय परसर्ग को अलग करके लिखना चाहिए। जैसे- उसके लिए।

(4) क्रिया के संबंध में दीजे, कीजे आदि एवं उसने, इसने, किसने आदि का प्रयोग बन्द होना चाहिए।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' पत्रिका मानकीकरण संबंधी विचारों के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनी। आचार्य द्विवेदी के प्रयासों का ही परिणाम

(कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please don't write anything in this space)

Scanned by CamScanner

था कि द्विवेदी युगीन काल जैसे मैथिलीशरण
गुप्त एवं गद्य-साहित्य जैसे - निबंधों में
आचार्य शुक्ल, उपन्यास एवं कहानियों में प्रेमचंद
एवं नाटक में प्रसाद द्वारा मानवीकरण के
विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान किया
गया। यही कारण है कि आचार्य द्विवेदी
के संबंध में आचार्य शुक्ल ने ठीक
ही कहा है कि 'साहित्य की भाषा के
स्तर पर द्विवेदी जी के इस शुभ प्रभाव
का स्मरण जब तक भाषा के लिए शुद्धता
आवश्यक समझी जाएगी, तब तक बना रहेगा।'

बहुत अच्छा

9/15

दृष्टि The Vision

(ग) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में ब्रह्म समाज के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर)

19 वीं एवं 20 वीं सदी में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में ~~समाजसुधार~~ क्रमशः समाजसुधार आन्दोलन एवं स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख भूमिका रही। समाजसुधार आन्दोलन में काल की दृष्टि से पहली समाज सुधार संस्था के रूप में ब्रह्मसमाज का योगदान अविस्मरणीय है।

ध्यातव्य है कि राजा राममोहनराय द्वारा ~~1828~~ 1828 ई. में 'ब्रह्मसभा' की स्थापना की गई जो आगे चलकर 'ब्रह्मसमाज' के नाम से जाना गया। ब्रह्मसमाज ~~से~~ से संबंधित ~~व~~ प्रसिद्ध व्यक्तियों में राजा राममोहन राय, देवेन्द्रनाथटैगोर, केशवचन्द्र सेन प्रमुख हैं।

राजा राममोहन राय द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार हेतु 'वेदांत सूत्र' का हिन्दी में अनुवाद किया गया।

Scanned by CamScanner

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इतना ही नहीं, राजा राममोहनराय द्वारा 'बंगदूत' नामक समाचार पत्र का भी आरंभ किया गया एवं 'उदंत मार्तण्ड' द्वारा आरंभ की गई परंपरा को जारी रखा गया। राजा राममोहनराय अपने इन प्रयासों द्वारा हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का आधार बनाना चाहते थे।

कालांतर में देवेन्द्रनाथ टैगोर एवं केशवचंद्र सेन द्वारा भी हिन्दी के राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया गया। दोनों के कार्यकाल में महाराष्ट्र एवं मद्रास में ब्रह्मसमाज की शाखाएँ खोली गईं जिसके द्वारा ब्रह्मसमाज के हिन्दी संबंधी विचार का प्रचार प्रसार हुआ।

केशवचंद्र सेन का राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अपने कई निबंधों में

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्थापना के विचार को प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए उन्होंने 'भारतीय एकता कैसे हो' एक विषय पर निबंध लिखते हुए स्पष्ट किया कि "इस समय जितनी भाषाएँ देश में प्रचलित हैं उनमें हिन्दी भाषा सारी जगह प्रचलित है, हिन्दी को एकमात्र भाषा के रूप में स्थापित कर यह कार्य सरलता से किया जा सकता है।"

इस प्रकार ब्रह्मसमाज के प्रयासों का ही परिणाम रहा कि आर्य समाज, आदि अन्य परवर्ती सुधार संगठनों द्वारा भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार प्रस्तावित किया गया।

अच्छा

8½/15

Scanned by CamScanner

3. (क) राजभाषा हिन्दी के विकास के संदर्भ में त्रिभाषा-सूत्र की परिकल्पना के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर)

'राजभाषा' का तात्पर्य 'शासन की भाषा' है। अर्थात् - सरकारी कामकाज हेतु प्रयुक्त भाषा ही राजभाषा कहलाती है।

भारतीय संविधान के भाग -17 (जिसका शीर्षक है 'राजभाषा') के अनुच्छेद -343 में वर्णित है कि 'संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी होगी।' साथ ही, अंग्रेज़ी का प्रयोग आरंभिक 15 वर्षों तक अर्थात् - 26 जनवरी 1965 तक होने की बात लिखी गई है। परन्तु, तमिलनाडु एवं बंगाल में विशेष रूप से हुए विरोध प्रदर्शनों के कारण 'राजभाषा अधिनियम 1963' द्वारा 1965 के बाद भी अंग्रेज़ी के प्रयोग को जारी रखने को वैधानिकता प्रदान की गई।

इस प्रकार वर्तमान स्थिति यह है कि संविधान में वर्णित होने के बावजूद हिन्दी को देश की 'एकमात्र राजभाषा'

Scanned by CamScanner

का दर्जा प्राप्त नहीं है। अत: राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न आयोगों, संसद के संकल्पों (1968) में 'त्रिभाषा सूत्र' को भी एक उपाय बताया गया।

'त्रिभाषा सूत्र' का तात्पर्य है कि एक विद्यार्थी को तीन भाषाओं का ज्ञान कराया जाए:-

(1) पहली भाषा मातृभाषा होगी। विद्यार्थी को ~~प्रारम्भिक~~ प्राथमिक शिक्षा उसकी मातृभाषा में दी जाए।

(2) दूसरी भाषा राष्ट्रभाषा होगी। अर्थात् - दक्षिण एवं पूर्वोत्तर भारतीय विद्यार्थियों के लिए हिन्दी एवं हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए संविधान की 8 वीं अनुसूची की भाषा। राष्ट्रीय एकता हेतु उचित समझा गया कि हिन्दी भाषी विद्यार्थी दक्षिण या पूर्वोत्तर भारत की भाषा को चुनें।

(3) तीसरी भाषा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अर्थात्- अंग्रेजी होगी। भूमण्डलीकरण के दौर में अंग्रेजी का अध्ययन भी आवश्यक है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
[Please do not write anything except the question number in this space]

सत्य यह है कि यदि 'त्रिभाषा सूत्र' का क्रियान्वयन पूरी सख्ती से किया जाता, तो भारत की भाषायी समस्या का समाधान हो सकता था। केवल कुछ सरकारी विद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में ही इस सूत्र का सही तौर पर पालन हुआ। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में दूसरी भाषा के तौर पर 8वीं अनुसूची की संस्कृत या भारत-पार की किसी भाषा का अध्ययन करके खानापूर्ति की गई।

त्रिभाषा सूत्र राजभाषा हिन्दी के प्रचार हेतु आवश्यक अन्य उपायों में एक महत्वपूर्ण उपाय है। आवश्यकता इसके प्रभावी क्रियान्वयन की है। इस संदर्भ में पहला प्रयास हिन्दी भाषी राज्यों की तरफ से होना चाहिए कि वे द्वितीय भाषा के रूप में संस्कृत के स्थान पर दक्षिण भारतीय या पूर्वोत्तर भारत

Scanned by CamScanner

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की किसी भाषा का अध्ययन करें। इससे दक्षिण भारतीय राज्यों में भी 'हिंदी के भाषायी साम्राज्यवाद' की भावना कमजोर होगी एवं वे भी स्वैच्छिक तरीके से हिंदी का अध्ययन करने के लिए प्रेरित होंगे।

अच्छा

11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Scanned by CamScanner

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर)

वैसे तो देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक एवं विकसित लिपि है। परंतु, इसमें सुधार हेतु कुछ सुझाव दिए जा सकते हैं। जैसे:-

(क) ~~ऋ~~, ~~ऋ~~, ऋ, ष, आदि का उच्चारण विस्मृत हो चुका है। अतः तत्सम शब्दों में प्रयोग के अलावा इनका सीमित प्रयोग उचित है।

(ख) अनुस्वार का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा करके सरलता ~~लाई~~ की जा सकती है परंतु पंचमाक्षर लिपि में बने रहें क्योंकि कई संस्कृत शब्द जैसे 'वाङ्मय' एवं पूर्वोत्तर भाषाओं के कई शब्दों हेतु पंचमाक्षरों की आवश्यकता है।

(ग) निम्नलिखित ध्वनियों के विकल्पों में बाद वाला रूप मान्य हो ~~[illegible]~~ :-

अ → अ   झ → झ
ध → छ   ख - ख
भ → भ
ध → ध

Scanned by CamScanner

(घ) फारसी के प्रभाव से ~~औ~~ एवं अंग्रेज़ी के प्रभाव से क़, ख़, ~~ग़~~ ज़, फ़ आदि की परंपरा चल रही है। इसे स्वीकार किया जाए।

(ङ) 'ऑ' ध्वनि का प्रयोग अंग्रेज़ी शब्दों में किया जाता है जैसे- ऑफ्टर। यह 'औ' एवं 'ओ' से अलग है। इसे स्वीकार करना चाहिए।

(च) ~~[illegible]~~ क्ष, त्र, ज्ञ आदि संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग उचित है इससे ~~[illegible]~~ देवनागरी लिपि 'प्रयत्नलाघव' एवं 'स्थानलाघव' का गुण प्राप्त करती है।

(छ) ध्वनि संकेतों पर शिरोरेखा का प्रयोग भी उचित है। इससे पदों के रूप में प्रयुक्त होने पर बोधगम्यता बनी रहती है।

(ज) एक अन्य सुझाव देवनागरी लिपि के अखिल भारतीय लिपि बनने से संबंधित है। इसके लिए

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)
Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निम्नलिखित ध्वनियों को स्वीकार करने की आवश्यकता है :-

बांग्ला एवं असमिया → (अ) (अन्तर्मुखी उच्चारण)

कश्मीरी → ॵ, ऑ, ॳ

दक्षिण भारतीय भाषाओं → ऍ, ऒ (दोनों ह्रस्व स्वर) ऩ, ऱ

सिंधी → ॻ, ॼ, ॾ (अन्तर्मुखी उच्चारण)

मराठी → ळ, च़, ज़ (दन्त के साथ तालु भी)

उपरोक्त ध्वनियों के उच्चारण में भिन्नता है अर्थ में नहीं। अतः संकेताक्षरों के नीचे रेखा या बिंदु द्वारा इन्हें स्वीकार किया जा सकता है।

अच्छा

8½ / 15

Scanned by CamScanner

(ग) "हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' का ऐतिहासिक महत्त्व है।" इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर) बीसवीं शताब्दी में हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास के संदर्भ में कई व्यक्तिगत एवं संस्थागत प्रयास किए गए। एक ओर जहाँ तिलक, सावरकर, गोरखनाथ, श्याम सुन्दर दास आदि के द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के विकास के प्रयास किए गए; वहीं दूसरी ओर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ 'नागरी प्रचारिणी सभा' का योगदान भी अविस्मरणीय है।

हिन्दी भाषा के विकास हेतु महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किया गया। उनके प्रयासों का ही परिणाम था कि प्रेमचन्द द्वारा कहानियों, उपन्यासों में, आचार्य शुक्ल द्वारा निबंधों में हिन्दी भाषा के एक मानक रूप का

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयोग प्रारंभ हुआ। 'नागरी प्रचारिणी सभा' द्वारा हिन्दी साहित्य के प्रकाशन स्वरूप हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। उदाहरण के लिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' भी सन् 1929 में नागरी प्रचारिणी सभा के ग्रंथ 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका में लिखा।

देवनागरी लिपि के विकास में भी 'नागरी प्रचारिणी सभा' का महत्वपूर्ण योगदान है। 1935 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नागरी लिपि सुधार समिति' द्वारा सुझाए गए सुझावों पर विचार करने के लिए एवं देवनागरी लिपि के विकास के लिए 'नागरी प्रचारिणी सभा' द्वारा सन् 1945 में 'नागरी लिपि सुधार

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उपसमिति' का गठन किया गया। इस समिति द्वारा सुझाए गए उपाय निम्नलिखित हैं:-

(1) 'अ' की बारहखड़ी का प्रयोग ठीक नहीं है।

(2) 'ख' को जोड़कर लिखा जाना उचित है।

(3) गौरखनाथ का 'ऽ' संकेताक्षर द्वारा महाप्राण बनाने का विचार उचित नहीं है।

(4) मात्राओं को जोड़कर ही लिखा जाना देवनागरी लिपि को वैज्ञानिकता प्रदान करता है।

(5) शिरोरेखा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस प्रकार देवनागरी लिपि एवं भाषा के विकास में नागरी प्रचारिणी सभा का महत्वपूर्ण एवं विशेष योगदान रहा है।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Scanned by CamScanner

A3

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

10 × 5 = 50

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए:

(क) प्रताप नारायण मिश्र

उत्तर) 'ब्राह्मण' पत्र के संपादक प्रताप नारायण मिश्र भारतेन्दु मंडल के जिंदादिल कवि-लेखक हैं। भारतेन्दु मंडल के अन्य सदस्यों की तरह कविता एवं गद्य की विभिन्न विधाओं में इनका योगदान रहा है।

प्रतापनारायण मिश्र की प्रमुख रुचि काव्य लेखन में रही है। 'प्रताप लहरी' इनका प्रमुख काव्य संग्रह है। ये पुराने ढंग की श्रृंगारी कविता (विशेषत: समस्यापूर्ति) में बेहद कुशल थे। इसके अलावा कहीं-कहीं तत्कालीन देश की चिंता भावना भी इनके काव्य में दिखाई देती है -

" हम आरत भारत वासिन पै
अब दीन दयाल दया करिए।"

काव्य लेखन के अलावा निबंधों विशेषकर भावपरक निबंधों में मिश्र जी

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

का प्रमुख योगदान रहा है। 'बुढ़ापा', 'गौरेया' आदि विषयों पर भी निबंध लिखे हैं। निबंधों में हास्य विनोद का भरपूर प्रयोग किया है। निबंधों के अलावा अन्य विधाओं जैसे - नाटक में भी मिश्र जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

प्रताप नारायण मिश्र काव्य भाषा के तौर पर ब्रजभाषा को ही काम्य मानते थे। परंतु, गद्यभाषा के तौर पर खड़ी बोली का प्रभावशाली प्रयोग इन्होंने किया है। 'ब्राह्मण' पत्र में इनकी हास्य विनोदपूर्ण शैली का एक उदाहरण दृष्टव्य है- "हमने कुछ अवगुण भी हैं तो सुनिए। जन्म हमारा फागुन में हुआ है और होली की पैदाइश प्रसिद्ध है।"

हिन्दी का ईवेंट कहा गया। लोकोक्तियों एवं मुहावरों में भी रुझान

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Scanned by CamScanner

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविवचन सुधा

उत्तर) खड़ी बोली ~~के~~ एवं गद्य के विकास में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का योगदान अविस्मरणीय है। 'गद्य के विस्फोट के युग' में भारतेन्दु द्वारा गद्य की विभिन्न विधाओं में योगदान दिया गया जिसमें पत्रकारिता भी शामिल है।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा हिन्दी पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। 'कविवचनसुधा', 'बालाबोधिनी' एवं 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' भारतेन्दु की तीन प्रमुख पत्रिकाएँ रहीं।

'कविवचनसुधा' द्वारा भारतेन्दु ने 'उदन्त मार्तण्ड' के रूप में शुरू हुई हिन्दी पत्रकारिता की परंपरा को जारी रखा। भारतेन्दु द्वारा 'कविवचनसुधा' में केवल साहित्यिक विषयों पर ही नहीं,

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

साहित्येतर विषयों जैसे- समाज, राजनीति, अर्थनीति आदि पर भी लिखा गया। इस प्रकार पाठक वर्ग के बहुआयामी विकास का कार्य भारतेन्दु की कविवचनसुधा द्वारा बखूबी संपन्न हुआ।

कविवचनसुधा का प्रमुख योगदान भाषा के स्तर पर भी है। इस पत्रिका द्वारा भारतेन्दु ने राजा ~~शिवप्रसाद~~ सितारेहिंद की फ़ारसी निष्ठ एवं राजा लक्ष्मणसिंह की संस्कृत-निष्ठ शैलियों का समन्वय कर 'हिंदुस्तानी' को गद्यभाषा का रूप प्रदान किया। इसी संदर्भ में आचार्य शुक्ल का मत है कि "भारतेंदु जब गद्य हेतु अपनी मंजी हुई परिष्कृत भाषा सामने लाए तो हिंदी बोलने वाली जनता को गद्य के लिए खड़ी बोली का प्राकृत साहित्यिक रूप मिल गया। भाषा के स्वरूप का प्रश्न न रह गया।"

5½/10

पत्रिका का प्रकाशन वर्ष भी बताएँ

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर)

(ग) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा

मनोवैज्ञानिक उपन्यास हिन्दी उपन्यास के इतिहास में प्रेमचंदोत्तर युग की एक प्रमुख धारा है। इस धारा से संबंधित प्रमुख उपन्यासकारों में जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, डॉ. देवराज प्रमुख हैं।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों पर फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव है जिसके अनुसार व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके अचेतन व अवचेतन मन से होती है। इस विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव इन उपन्यासों की निम्नलिखित विशेषताओं में देखा जा सकता है :-

(1) इन उपन्यासों में व्यक्ति के मन की गहराईयों के उद्घाटन द्वारा समाज में प्रचलित नैतिक सिद्धांतों की समीक्षा की गई है।

(2) इन उपन्यासों की कथावस्तु अन्तर्मुखी है। इनमें घटनाओं की जगह विश्लेषण प्रमुख है। उदाहरण के लिए अज्ञेय के

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास में विश्लेषण कई पृष्ठों तक फैला हुआ है।

(3) इन 'उपन्यासों' की भाषा अत्यंत प्रतीकात्मक है क्योंकि मन की अतल गहराईयों को सीधी-सपाट भाषा में व्यक्त करना संभव ही नहीं होता। उदाहरण के लिए त्यागपत्र की मृणाल कहती है कि "चिड़िया कितनी ऊँची उड़ जाती है, मैं चिड़िया होना चाहती हूँ।"

~~(4) इन उपन्यासों में भिन्न प्रतीक~~

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के प्रमुख उदाहरणों में अज्ञेय के 'नदी के द्वीप', शेखर एक जीवनी, जैनेन्द्र के 'त्यागपत्र', 'सुनीता', 'कल्याणी', इलाचन्द्र जोशी का 'जिप्सी', ग- देवराज का 'अजय की डायरी' प्रमुख हैं।

6

अच्छा

10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

उत्तर)

डा. नगेन्द्र द्वारा बताए गए रीतिकाल के प्रवर्तक केशवदास को उनके काव्य में निहित कठिनाईयों के कारण 'कठिन काव्य के प्रेत' कहा जाता है। इनके काव्य में ~~कठिनाई~~ कठिनता निम्नलिखित कारणों से आई है -

(1) एक साथ ~~कई~~ इतिहासकार (जहाँगीर जसचंद्रिका), दार्शनिक (विज्ञानगीता), आचार्यत्व एवं कवित्व को साधने के प्रयास के कारण कठिनता आई है।

(2) काव्यशास्त्रीय उपादानों का ज्ञान केशव को आनुवंशिक रूप से प्राप्त हुआ है।

"भाषा बोलि न जानहीं, जिनके कुल के दास।
भाषा कवि भो मंदमति, तेहि कुल केशवदास॥"

(3) आचार्य शुक्ल के अनुसार केशव में संबंध निर्वाह के अभाव के कारण ~~कई~~ अन्य युक्तियों के द्वारा काव्यत्व को साधने के प्रयास के कारण।

इनके कारण केशव के काव्य में कई स्तरों पर कठिनाई दिखाई देती है। ~~कहीं~~ कहीं-कहीं वाक्य न्यूनता या पद-न्यूनता देखी जा

Scanned by CamScanner

The Vision

सकती है -

"री ची री चौ
राम नाम सत्य व्याप।"

~~केशव द्वारा अलंकार एवं रस वर्णन भी~~
~~नगेन्द्र द्वारा अधिक तार्किक नहीं बताया~~
~~छंदों का अधिक प्रभाव~~

इसके अलावा छंदों के स्तर पर बहुरंगीता की आलोचना करते हुए आचार्य शुक्ल ने केशव के काव्य को 'छंदों का अजायबघर' कहा है।

परंतु, केशव का काव्य कई विशेषताएं भी धारण करता है। उनकी संवाद योजना हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है -

"मातु, कहाँ नृपतात! गए सुरलोकहिं, क्यों सुत शोक लिए।"

अन्य द्वारा केशव के काव्य में निहित कठिनाई का कारण बताते हुए कहा गया है कि "बिहारी को एक ट्रेडिशन बना बनाया मिला जबकि केशव द्वारा वह ट्रेडिशन बनाया गया।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अन्य

6

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पद्माकर का शृंगार-वर्णन

उत्तर) पद्माकर रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। 'पद्माभरण', 'पद्माभरण लहरी' एवं 'कलि का गुच्छा' उनके प्रसिद्ध काव्यसंग्रह हैं।

पद्माकर मुख्यतः शृंगार के कवि माने जाते हैं। उनका शृंगार भोगमूलक, देहमूलक है। निम्नलिखित उदाहरण में उन्होंने भोग के सारे साधनों को एकत्रित कर दिया है-

"गुलगुली गिल में गलीचा हैं गुनीजन हैं चांदनी हैं चिराग की माला है
कहे पद्माकर त्यों गजक गिजा है सजी सेज है सुराही है सुरा है और प्याला है।"

पद्माकर ने शृंगार वर्णन को त्योहारों से जोड़ा है। जैसे-

"ना अनुराग की फाग लख्यौ, जहँ राजत राग किसोर किसोरिन के रंग भीजिगी गोउरी, गोउरे के रंग भीजिगी गोरी।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुख्यतः पद्माकर द्वारा दरबारी परिवेश में अतिशयोक्तिपूर्ण वीरता, दानवीरता एवं शृंगार आधारित कविताओं की ही रचना की गई। परंतु जीवन के अंतिम दौर में भक्ति आधारित कविताएँ भी रचीं, जैसे:

"या जगजीवन को है यहै फल
जो छल छाँडि भजै रघुराई।"

स्पष्ट है कि पद्माकर का शृंगार वर्णन उनके समकालीन रीतिमुक्तकवियों के दायित्वमूलक शृंगारवर्णन से अलग भोगमूलक, देहमूलक शृंगार है।

अच्छा

6/10

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) हिन्दी की सतसई परंपरा का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसमें विहारी सतसई का स्थान निर्धारित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उत्तर) 'सतसई' नाम एक संख्यावाचक विशेषण आधारित नामकरण है जो 'सप्तशती' ~~सात सौ~~ का तद्भव रूप है। भारतीय काव्य परम्परा में रचनाओं के संख्यावाची नामकरण की प्रवृत्ति प्राचीन काल से रही है। इसके कुछ उदाहरण 'बेताल पचीसी', 'सिंहासन बत्तीसी' के रूप में देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार की एक परम्परा 'सतसई' परंपरा रही है जिसका प्रस्थान बिन्दु कवि हाल द्वारा रचित 'गाथासप्तशती' (गाहा सतसई) को माना जाता है जो कृष्ण भक्ति संबंधी सात सौ कविताओं का संकलन है।

कवि हाल की परम्परा पर हिन्दी की सतसई परंपरा का विकास हुआ। इसमें कई कवियों का योगदान रहा जैसे- बिहारी सतसई, वृन्द सतसई, मतिराम सतसई आदि।

Scanned by CamScanner

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी ~~की~~ के रीतिसिद्ध कवि बिहारीलाल की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' रही है। यह ~~~~ 713 दोहों का संकलन है। परंतु, बिहारी सतसई की सफलता के कारण 'सतसई' संज्ञा बिहारी सतसई के लिए ही रूढ़ हो गई है। अर्थात - सतसई नाम का ~~~~ उपयोग होते ही बिहारी सतसई का स्मरण होता है।

बिहारी सतसई की सफलता हेतु कई कारण उत्तरदायी हैं। पहला कारण यह है कि बिहारी सतसई में विस्मृत कर देने वाला विषयगत वैविध्य दिखाई देता है, वहीं दूसरी ओर इन्द सतसई एवं अन्य सतसइयाँ किसी एक विषय पर केन्द्रित हैं। उदाहरण के लिए -

"कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत है, नैनन ही सौं बात।" (संयोग शृंगार)

"मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोई
जा तन की झाँई परत, स्याम हरित दुति होई।" (भक्ति)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अनुभाव

बिहारी सतसई की सफलता का दूसरा कारण उनका शिल्पपक्ष है। भावों की समाहार क्षमता, अद्भुत बिंब निर्माण क्षमता (चलचित्र को देख लेने का अहसास) अलंकार कौशल आदि बिहारी सतसई को अन्य सतसई परंपरा की रचनाओं से श्रेष्ठ ही साबित करते हैं। बिहारी सतसई की अद्भुत बिंब निर्माण क्षमता निम्नलिखित उदाहरण में देखी जा सकती है –

"बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै, भौंहनु हँसै, दैन कहै नट जाय॥"

यही कारण है कि बिहारी सतसई जैसी रचना के कारण ही डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन को पूरे यूरोप के कवियों की तुलना में बिहारी श्रेष्ठ प्रतीत होते हैं। यही सफलता का प्रमाण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बिहारी सतसई के संबंध में प्रचलित निम्नलिखित उक्ति द्वारा दिखाई देता है-

"सतसइया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर
देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अच्छा

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "उपन्यासकार जैनेन्द्र ने हिन्दी उपन्यास को नया शिल्प दिया।" इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उत्तर) जैनेन्द्र का हिन्दी उपन्यास के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जैनेन्द्र हिन्दी के प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार रहे हैं। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार होने के चलते जैनेन्द्र पर फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव तो है ही, साथ ही गांधी का प्रभाव भी उपस्थित है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रूप में, जैनेन्द्र व्यक्ति के मन की तहों में झाँककर सामाजिक प्रचलित नैतिक मानकों की समीक्षा करते हैं। कथावस्तु के अन्तर्मुखी होने के कारण स्वाभाविक रूप से जैनेन्द्र का शिल्प पक्ष भी प्रेमचंद-कालीन उपन्यासों के शिल्प से भिन्नता रखता है। इसी संदर्भ में जैनेन्द्र द्वारा हिन्दी उपन्यासों को एक नया शिल्प प्रदान करने की बात विभिन्न विद्वानों

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

द्वारा कही गई है और यह नया शिल्प उनके प्रमुख उपन्यासों जैसे - त्यागपत्र, सुनीता, कल्याणी, परख, जानवर्धन आदि में दिखाई देता है।

शिल्प के स्तर पर जैनेन्द्र द्वारा सबसे पहला परिवर्तन भाषा के स्तर पर किया गया। प्रेमचंद कालीन सीधी, सपाट भाषा में मन की गहराईयों को स्पष्ट करना संभव नहीं था। अतः जैनेन्द्र की भाषा लक्षणात्मक एवं प्रतीकात्मक है:-

"देख, चिड़िया कितनी ऊँची उड़ जाती है। मैं चिड़िया होना चाहती हूँ।"

शिल्प के स्तर पर एक अन्य परिवर्तन यह है कि जैनेन्द्र के उपन्यासों में कथानक घटनाओं के माध्यम से नहीं, बल्कि विश्लेषण के माध्यम से विकसित होता है। एक ही मनःस्थिति का लंबा विश्लेषण उनके औपन्यासिक शिल्प की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतना ही नहीं, जैनेन्द्र द्वारा उपन्यास लेखन के संबंध में भी अपनी तलाशशीलता का परिचय दिया गया है। अर्थात् - उन्होंने उपन्यास लेखन की विभिन्न शैलियों को आज़माया है। उदाहरण के लिए 'त्यागपत्र' में एक पात्र ही लेखक के रूप में है। वहीं, 'जनवर्तन' डायरी शैली पर आधारित है।

इस प्रकार जैनेन्द्र द्वारा हिन्दी उपन्यासों को शिल्प के स्तर पर बड़ा योगदान दिया गया जो आगे चलकर 'नया उपन्यास' की पूर्वपीठिका साबित हुआ।

अच्छा 8/15

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) भक्तिकालीन कृष्णभक्तिधारा के कवि नंददास की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

उत्तर)

कृष्णभक्तिकालधारा में 'अष्टछाप' के आठ कवियों में नंददास भी एक महत्वपूर्ण कृष्ण भक्त-कवि हैं। भक्तिकाल में कृष्णभक्ति के साथ-साथ ब्रजभाषा के विकास में सूर के साथ नंददास का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

नंददास वल्लभाचार्य के 'शुद्धाद्वैतवाद' को अपना दार्शनिक आधार बनाते हैं। ये शुद्ध ईश्वर के रूप में जीव, जगत एवं ईश्वर को सत्य मानते हैं। इन्होंने सगुण ईश्वर की धारणा को स्वीकार किया है एवं 'कृष्ण' को अपना आराध्य माना है।

कृष्ण भक्ति-कालधारा के अन्य भक्त-कवियों की भाँति नंददास भी कृष्ण के लोकरंजक स्वरूप एवं उनकी लीलाओं का वर्णन

Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned by CamScanner

करते हैं।

"जो यह लीला भगत चित दै सुनै सुनावै
प्रेम भक्ति सो पावै, अरु सुवक चित आवै।"

कृष्णभक्त काव्यधारा में नंद का महत्वपूर्ण योगदान उनकी भाषा के कारण भी है। ~~शब्दभाव~~ जिस प्रकार तुलसी अवधी को संस्कृत का सौंदर्य प्रदान करते हैं; उसी प्रकार नंददास ब्रजभाषा को ~~अवधी~~ ~~के~~ ~~सौंदर्य~~ संस्कृत का सौंदर्य देते हैं:-

"जो उनके गुन नाहीं और उनके गुन भए कहाँते
बिज बिना तरु जमे, मोहि तुम कहौ कहाँ ते।"

काव्यरूप के स्तर पर नंद की अधिकांश रचनाएँ मुक्तक हैं; परंतु 'भँवरगीत' उनका प्रबंध काव्य है जो अपनी कुछ मौलिक उद्भावनाओं हेतु प्रसिद्ध रहा है।

इतना ही नहीं, नंद का काव्य-सौष्ठव अन्य भक्त कवियों से बेहतर रहा है। यही कारण है उनके संबंध में एक प्रसिद्ध उक्ति ~~है~~ प्रचलित है:-

"और कवि गढ़िया
नंददास जड़िया।"

अच्छा प्रयास

8/15

नंद की विशेषता सही एवं मौलिक है जबकि पूर्व की ओर आलोचनात्मक।

641, प्रथम तल

Scanned by CamScanner